रिकॉर्डः– बदल जाए दुनिया... ओमशांति पिता श्री 24/11/67

ओमशांति। किसने कहा? कसम किसका और किसने कहा? बच्चे रेस्पान्ड करेंगे, हम आत्माओं ने कहा। किसके लिए कहा? परमपिता परमात्मा के लिए कहा। क्या कहा? जब तक तुम्हारे शरीर में दम है या जीता हूँ, हम प्रतिज्ञा करते हैं, हम जीते जी आपके ही याद में रहेंगे। यह भी बच्चे समझते हैं यह कोई इतना सहज नहीं है जो अपन को सदैव आत्मा समझ और बाप को याद करते रहे। बड़ी डिफीकल्ट बात है। माया के तूफान भी बहुत लगते हैं। घड़ी–2 बुद्धि का योग तोड़ देती है। इसके लिए भी बाप तो उपाय बहुत बतलाते रहते हैं। याद की यात्रा के लिए अपन पास डायरी रखो। अगर डायरी खाली होगी तो आत्मा को ख्याल रहेगा डायरी भरी नहीं है। इसमें घड़ी–2 सावधानी चाहिए। बच्चों को एक ही बार समझाया जाता है। एक ही बार बाप का पार्ट बजता है पतितों को पावन बनाने वा तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने लिए। पतित से पावन एक ही जन्म में बनते हैं। सीढ़ी उतरने में तो 84 जन्म लगती है। शुरू से लेकर कुछ न कुछ कला कम होती जाती है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने का डारैक्शन मिलता ही नही है। यह डारैक्शन अभी ही मिलता है। आत्मा सतोप्रधान बन जाती है। फिर आस्ते–2 कुछ न कुछ कला कम होती जाती है। एक ही बार शिक्षा मिलती है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने। जबकि सतोप्रधान दुनिया में जाना है। फिर कला कैसे कम होती जाती है यह बच्चों को वहाँ मालूम नहीं पड़ता है। यह पता तब ही पड़ता है जब बाप आकर याद की (यात्रा) सिखलाते हैं। तुम बुलाते भी हो हे पतित–पावन आकर पावन बनाओ। पतित–पावन सीता–राम यह अक्षर तो साधु–संत सब गाते रहते हैं। वह जानते नहीं कि हम पावन कैसे बनेंगे। सिर्फ गाते रहते हैं। गंगा घाट वा जमुना घाट पर जाए उनको पतित–पावन समझ बैठ कर स्नान करते हैं। अभी तुम समझते हो गंगा स्नान से तो कोई पावन तो बन नहीं सकते। याद की यात्रा सिवाय और कोई पावन बनने का उपाय नहीं। यह भी तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते। बाप कहते हैं– बच्चे, अपन को आत्मा समझो। हर एक बात (समझने) की है। पूछते हैं तुम कैसे कहते हो कि शिवबाबा आते हैं। वह भी समझने की बात हो जाती है। देखने की बात नहीं। वह तो कह देते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। फिर वह कैसे कहेंगे कि अपन को आत्मा समझो। आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार रहते हैं। यह कोई भी समझते नहीं। वह तो आत्मा निर्लेप कह देते हैं। बाप कितना (सहज) बताते हैं। जास्ती कुछ तकलीफ नहीं देते हैं। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। बच्चे अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस। बाकी जो कहते हैं कल्प की आयु इतनी है, यह है, उनके लिए फिर यह चित्र हैं। डिटेल में चित्रों से समझाया जाता है। हो सकता है और भी चित्र बनाने पड़े। आधा कल्प भक्ति चलती है, आधा कल्प है ज्ञान। तुम ही सतोप्रधान से सतो में आते हा। आत्मा में खाद पड़ती है। अभी तुम्हारा एम–ऑब्जेक्ट है नर से नारायण बनना। इसलिए इनको सत्यनारायण की कथा कहा जाता है। बाप ने समझाया है वह सब तो है भक्तिमार्ग। ज्ञान सिर्फ एक ही बाप के पास है। वह ही ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर है। और कोई को भी ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर कह नहीं सकते; क्योंकि सभी 84 जन्म लेते–2 पतित ज़रूर बनते हैं। किसको भी एवरप्यारे नहीं कह सकते। यह ..... बातें बुद्धि में धारण करना है। बच्चे समझते हैं सतयुग में सतोप्रधान थे। फिर नीचे उतरते आए हैं। हम सतोप्रधान कैसे बन सकेंगे? यह (संशय) भी क्यों लाना चाहिए। संशय बुद्धि विनश्यन्ति अर्थात् कम पद पावेंगे। बाबा ने समझाया है यह अविनाशी ..... है .... विनाश नहीं हो सकता। थोड़ा भी सुनते हैं तो उनको पद ज़रूर मिलता है। इतने सारी सूर्यवंशी .... चंद्रवंशी राजधानी स्थापन होती है तो प्रजा भी चाहिए ना। ऐसे तो नहीं इतने ढेर प्रजा ..... कर्मातीत अवस्था में ले जावेंगे। (मुश्किल) है। सबका अपना–2 पुरुषार्थ है। अभी तुम बच्चे जानते .....

.....

..... आते रहते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार सभी मनुष्य पार्ट बजाए रहे हैं। सेकण्ड ब सेकण्ड जो पास होता है ड्रामा। जो सीन एक बार शूट हुई वह फिर हूबहू ज़रूर रिपीट होगी। समझो, फिल्म शूट करते हैं, मक्खी उड़ गई। शूटिंग में आ गया तो जब–2 वह फिल्म रिपीट होगा तो मक्खी भी ज़रूर ऐसे उड़ती देखने में आवेगी। वह सब हैं हद की बातें। यह तो बेहद का ड्रामा है ना। बेहद का बाप ही ड्रामा के आदि–मध्य–अंत को जानते हैं। बाप ही सृष्टि का बीजरूप, निराकार है। सत्य है और चैतन्य है। चैतन्यता (आत्मा) लाती है ना। बाप को भी नॉलेजफुल, ब्लिसफुल कहा जाता है। सारी विश्व को लिबरेट करते हैं। मनुष्य गाते तो हैं; परन्तु सिर्फ कहने मात्र। जैसे नाम मात्र पूजा करते हैं। लोटी चढ़ाते हैं। जानते कुछ भी नहीं। यह कौन है, इनका नाम–रूप, देश–काल क्या है, कुछ भी ख्याल नहीं करते। बस, सिर्फ कहते हैं भगवान है। और कुछ नहीं जानते। इसको कहा जाता है अंधश्रद्धा। बाप ने भी कहा है अंधे के औलाद अंधे। बाप को ही नहीं जानते। न किसी देवता को जानते हैं, न बेहद के बाप को जानते हैं। बाप को तो जान(ना) चाहिए ना। इसलिए ही फार्म भराया जाता है। शरीर का बाप तो है। जैसे शरीर बड़ा है तो शरीर का बाप भी बड़ा है। लौकिक बाप तो बड़ा है ना। अच्छा, आत्मा जो इस शरीर को चलाने वाली है, इतनी छोटी आत्मा उनको बाप कौन? मूँझ पड़ते हैं। कहते हैं हम भाई–2 हैं। ज़रूर आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा एक ही होगा; परन्तु समझते नहीं हैं। आजकल तो कह देते हैं आत्मा सो परमात्मा। तो फिर ब्रदर्सहुड हो जाता है। इसलिए मनुष्य मूँझ पड़ते हैं। फार्म भराया जाता है समझाने के लिए। बाप समझाते हैं दुनिया में तो अनेक प्रकार के मनुष्य हैं ताल तरकाल करते हैं। कैंसर निकालना, यह करना। इसमें कोई भी फायदा नहीं। मनुष्य तो पुकारते हैं हे पतित–पावन, हमको आकर पावन बनाओ; क्योंकि आत्मा जानते हैं हम पावन बनने बिगर मुक्ति–जीवनमुक्ति में नहीं जा सकते। इसलिए बुलाते हैं। कब से पतित होते हैं? जब रावण राज्य आता है। आधा–आधा है। माया का राज्य भी आधा। ईश्वरीय राज्य स्थापन किया हुआ भी आधा कल्प चलता है। ऐसे नहीं सिर्फ परमात्मा सर्वशक्तिवान है। समय पर फिर रावण भी सर्वशक्तिवान है। सब माया के गुलाम बन जाते हैं। ईश्वर को बिल्कुल ही जानते नहीं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है बाबा हमको क्या सिखलाते हैं। साधु–संत–गुरु आदि क्या सिखलाते हैं। रात–दिन का फर्क है। कोई भी गुरु–गोसाई नहीं जो यह समझावे कि तुम आत्मा हो। तुम पहले सतोप्रधान थे। फिर 84 जन्म लिए। यह भी समझते हैं जिन्होंने 84 जन्म लिए होंगे, पहले–2 भक्ति शुरू की होगी वह ही यहाँ ठहर सकेंगे। भक्ति के हिसाब से तुम बच्चे आते हो। जिसने बहुत भक्ति की होगी वह ही बहुत अच्छी रीत पढ़ेंगे। कम भक्ति करने वाले कम पढ़ेंगे। जिसने बहुत भक्ति की होगी वह चटक पड़ेंगे। कब भी पढ़ाई क्लास मिस न करेंगे; क्योंकि भक्ति का फल मिलता है ना। जिसने बहुत भक्ति की है उनको ज़रूर पहले मिलना चाहिए। इसने ही पहले–2 सोमनाथ का मंदिर बनाया होगा। शिव ने ही सोमरस पिलाया, ज्ञान–योग सिखाया है। इसलिए इनका सोमनाथ नाम रख दिया है। कितने बड़े–2 मंदिर बनाए हैं। सोमनाथ का मंदिर कितना हीरो–जवाहरों से सजा हुआ था। अभी जो मंदिर है वह तो जैसे वर्थ कौड़ी है। वह था वर्थ पाउंड। इस समय के मनुष्य भी वर्थ कौड़ी हैं। अभी तुम वर्थ पाउंड बनते हो। शुरू में कितना धन था। पद्मों की मिल्कियत थी। बाप कहते हैं– मीठे बच्चों, तुम पद्मभाग्यशाली बनते हो। वहाँ अनगिनत धन रहता है। तुम गिनती कर नहीं सकेंगे। सोने–जवाहरों के महल होते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे, अभी यह मंदिर हैं नहीं तो हम कैसे मानेंगे? हिस्ट्री–जॉग्राफी तो पढ़ी है ना। हिस्ट्री अर्थात् राज्य किसने किया। जॉग्राफी माना कितनी जमीन पर कितना (समय) राज्य किया। दुनिया में कोई भी ऐसा सतसंग नहीं होगा जिसमें मनुष्य अपन को ..... बाप को याद करे। अभी तुम सत (बाप) के संग में बैठे हो। तुमको पता है .... समझाते हैं। बाकी मनुष्य तो झूठ ही बोलते हैं। उनको कहा ही जाता है

विनाश काले विपरीत बुद्धि। जो कुछ भी सुनाते हैं झूठ। ईश्वर सर्वव्यापी कहाँ लिखा हुआ है? मनुष्य नाम लेते हैं गीता का। गीता में तो भगवानुवाच है कि मैं बहुत जन्मों के भी अंत में साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। तो फिर सर्वव्यापी हूँ यह कैसे कहेंगे? अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। अन्दर में जानते हो हम आत्माओं को शिवबाबा नॉलेज दे रहे हैं। यह कथा नहीं है। यह तो नॉलेज है। बाकी बच्चों को बैठ समझाता हूँ कि तुम पतित से पावन कैसे बनो। आगे बने थे। 5000 वर्ष पहले भी तुम पतित थे। मैंने तुमको रास्ता ..... था पावन होने का। कल्प पहले भी बताया था। ऐसे कोई मनुष्य को तो कहने आवेगा नहीं। बाप ही कहते हैं, बच्चे, हमने तुमको राजयोग सिखाया था, जिससे राजधानी स्थापन हुई थी। यह है सच्ची। वह झूठी सत्यनारायण की कथा बैठ सुनाते हैं। नाम रख दिया है सत्यनारायण की कथा। भारत में कथाएँ भी (मशहूर) हैं। सत्यनारायण की कथा अर्थात् नर से नारायण बनने की कथा। पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं। वह यह नहीं समझते कि हम यह कथा सुनने से नर से नारायण बनेंगे। नहीं। तो वह झूठ हुआ ना। अमरनाथ की कथा कौन सी है, जो तुमको सुनाते हैं। वह तो क्या–2 सुनाए देते हैं। पहाड़ी पर शंकर ने अमरकथा पार्वती को सुनाई। अभी तुम इन बातों को समझते हो। बरोबर यह मृत्युलोक है। हमको बाप अमरलोक की कथा सुनाते हैं। शास्त्रों में तो भक्तिमार्ग की कथाएँ लिख दी हैं। यह भी होना है। आधा कल्प यह कथा सुनते, चित्र बनाते आए हैं। तुम बच्चों को स्मृति में आया है कैसे हम पहले वाममार्ग में जाते हैं। पहले–2 अव्यभिचारी पूजा शुरू होती है। शास्त्रों में तो झूठी दंतकथाएँ लिख दी हैं। अभी अमरनाथ सूक्ष्मवतन में रहने वाला वह फिर पहाड़ी पर कहाँ से आवेगा? भला एक पार्वती को कथा सुनाई क्या? बाप कहते हैं तुम सब पार्वतियाँ हो। जैसे गंगा को पतित–पावनी कहते हैं; परन्तु स्नान तो और भी नदियों पर जाकर करते हैं। वैसे पार्वतियाँ और भी तो होंगी ना, जो कथा सुनती होंगी। मनुष्य तो जो सुनते हैं सत्य करते रहते हैं। बाप समझाते हैं यह आधा कल्प वेद–शास्त्र–तीर्थ आदि चलती है। इन गीता आदि शास्त्र पढ़ने से मेरे को प्राप्त नहीं करते। वह समझते हैं हम भगवान पास पहुँच जावेंगे। यह सब रास्ता भगवान से मिलने के हैं। बाप कहते हैं भक्ति तो दुर्गति है। इसलिए सीढ़ी भी बनाई है। मनुष्यों को सहज समझ में आ जावे कैसे उतरती कला होती है। चढ़ती कला को नई दुनिया कहा जाता है। उतरती कला माना पुरानी दुनिया। यह तो कामन बात है। यह जो बाप बैठ समझाते हैं, एक भी बात कोई की बुद्धि में नहीं है। वह है ही भक्तिमार्ग। यह है ज्ञानमार्ग। अभी ज्ञानमार्ग जिंदाबाद होता है। इस पढ़ाई में भी कितनी डिफीकल्टी आती है। चलते–2 गिर पड़ते हैं। चोट खा लेते हैं। पहले होती है देहाभिमान की चोट। फिर काम की चोट। जब तक ब्राह्मण न बने हैं तो शूद्र ही हैं। रावण सम्प्रदाय के हैं। इस समय तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय के बनते हो। तुम बनेंगे दैवी सम्प्रदाय। उत्तम कौन सा जन्म ठहरा? यह ठहरा ना! इसको ही अंतिम दुर्लभ जीवन कहा जाता है। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, जबकि तुम कनिष्ठ से उत्तम बनते हो। तुम समझते हो हम कनिष्ठ वर्थ नोट ए पैनी थे। और कोई मनुष्य अपन को ऐसे समझते थोड़े ही हैं। वह पाउंड बनने वाले ही नहीं हैं तो समझेंगे फिर क्या! किसको कुछ भी पता नहीं है। अभी तुम समझते हो कल हम नीच थे। अभी हम ऊँच बनते हैं। तुच्छ बुद्धि से स्वच्छ बुद्धि बन रहे हैं। कल बेसमझ थे, आज समझदार बनते हैं। तुम्हारी एम–ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। यह बैज तो सदैव साथ रहना चाहिए। यहाँ पहनो, चाहे पॉकेट में रखो, फिर घड़ी–2 देखो, हम यह बन रहे हैं। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। याद की यात्रा बहुत ज़रूरी है। यह है रूहानी यात्रा। वह है जिस्मानी यात्राएँ भटकने कीं। इसमें तो शांत रहना होता है। खाते–पीते, कुछ करते सिर्फ अपन को आत्मा समझो। आत्मा खाती है इन ऑरगन्स द्वारा। आत्मा को स्वाद आता है। आत्मा अलग हो जाती है तो कुछ भी पता नहीं रहता। आत्मा मे ही अच्छे वा बुरे संस्कार होते हैं, जिस अनुसार फिर जन्म लेती है।

कोई धन दान करते हैं तो भी अल्प काल लिए रिटर्न में मिलता है। यहाँ तुम डबल दानी बनते हो। ... विनाशी धन भी तो अविनाशी धन भी दान करते हो। यह अविनाशी ज्ञान का एक–2 अक्षर लाखों रुपये का है। भक्तिमार्ग में तो जो शास्त्र आदि बैठ सुनाते हैं उनकी आमदनी होती है। भविष्य थोड़े ही कुछ मिलता है। भविष्य के लिए पहले तो पतित से पावन ..... है। तुम बच्चे अभी इस ड्रामा के आदि–मध्य–अंत डेक्युरेशन(ड्युरेशन) को जानते हो। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते हैं। हाँ, आजकल कहते रहते हैं यह (महा)भारत लड़ाई है। 5000 वर्ष पहले हुई थी। सो भी कब–2 मनुष्यों के अक्षर निकलते हैं। बाकी तो गपोड़े भी बहुत मारते रहते। तुम कहते हो 9 वर्ष बाद विनाश होगा। यह कोई उन.... की बुद्धि में बैठता नहीं है। कौन मरेंगे, कौन जीयेंगे, सब खण्ड हो जावेंगे वा क्या यह किसको पता थोड़े ही है। साइंस घमंडी समझते हैं यह तो अपने ही कुल का विनाश करने बनाई है। यह तो डिस्ट्रॉय कर देना चाहिए; परन्तु ऐसे थोड़े ही हो सकता है। पदमों रुपये खर्च कर फिर डुबोये कैसे देंगे। बाप कहते हैं यह मिसाइल्स वही है जो 5000 वर्ष पहले भी हुई थीं। एक धर्म की स्थापना, अनेक धर्मों का विनाश होना ही है। तुम स्थापना कर रहे हो। तुम हो इनकागनिटो वारियर्स। तुम विश्व के मालिक बनेंगे। कोई समझ सकेंगे? तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते हैं। जो अच्छी रीत समझने वाले होंगे उनको नशा चढ़ेगा हम भविष्य लिए योगबल से अपनी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह याद हो तो खुशी में रहे। भूल जाते हैं तो जैसे शूद्र बन जाते हैं। याद में रहते हैं तो ब्राह्मण हैं। तुम्हारा लंगर अब उठा हुआ है। तुम बहुत नजदीक आए पहुँचे हो। कलियुग के बाद सतयुग आवेगा ज़रूर। यह है छोटा सा पुरुषोत्तम संगमयुग। इस छोटे युग को 100 वर्ष आयु ..... है। (इतना समय) लग जाता है। .... दुनिया बन जाती है। राम गयो, रावण गयो, जिसका बहुपरिवार है। तुम्हारा परिवार कितना छोटा है। चोटी छोटी होती है ना। खालसा लोग बड़ा (चोटा) रखते हैं। तुम्हारा गायन है गऊ के खूर जैसी (चोटी)। आजकल चोटी रखाते नहीं हैं। आगे यह निशानी थी। एक तो चोटी, दूसरा जनेऊ। अब दोनों नहीं हैं। दिन–प्रतिदिन निशानियाँ भी गुम होते जाते हैं। वेजीटेरियन कॉन्फ्रेन्स लिए भी बाबा ने समझाया था वह है सिंगल वेजीटेरियन, तुम हो डबल। दुनिया में वेजीटेरियन तो बहुत हैं। तुम डबल वेजीटेरियन बनते हो। नानक ने भी कहा है असंख्य चोर.... उनको गुरु भी कह नहीं सकते। गुरु वह जो सद्गति करे। यह तो दुर्गति करते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम सबकी सद्गति करता हूँ। फिर दुर्गति कौन करते हैं? साधु–संत, ऋषि–मुनि आदि। कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। तो बेमुख किया ना। यह सब बातें धारण करनी हैं। औरों को समझाना है। बोलो, तुम आत्मा हो। तुम्हारा बेहद का बाप निराकार है। वही पतित–पावन है। वह बाप कहते हैं देह के सर्व संबंध छोड़ मामेकं याद करो। यह बाप के (डायरेक्शन) हैं। इन पर अगर न चलते हैं तो नाफरमानबरदार कहेंगे ना। बाप की (आज्ञा) नहीं मानते। .... याद में ही तूफान आते हैं। पढ़ाई में तकलीफ होती है जो पढ़ते नहीं। यह तो रोज़ पढ़ना चाहिए, नहीं तो धारण कैसे होगी? भगवान पढ़ाते हैं ना। भगवानुवाच मनमनाभव। याद से ही प्योर बनना है। प्योर बनने बिगर वापस तुम जावेंगे कैसे? नहीं तो सज़ा खानी पड़ेगी। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। कितना क्लीयर बाप समझाते हैं। इस पर अमल करना है। शिवबाबा तुम आत्माओं से बैठ बात करते हैं। वह तो कह देते हैं ईश्वर .... ईश्वर है। ड्रामा अनुसार जिसको जो पार्ट मिला हुआ है वही बजावेंगे। दूसरा कोई .....। बाप को भी अपना पार्ट मिला हुआ है। पार्ट चेंज नहीं हो सकता। सभी अपने–2 पार्ट बजाते हैं। (बाप बच्चों) को नई–2 प्वाइंट्स देते रहते हैं। पर वह टाइम, वह दिन चेंज हो जाता है। बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चे बहुत गई बाकी थोड़ी रही। तुम जानते हो कितने गए। 4980 वर्ष पास हो गए। दुनिया में और कोई समझ न सके। मूल बात बाप कहते हैं कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से तुम पावन ..... मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।